VIII/321

से:- हीरालाल व्यास
132/बी० बापूनगर
जयपुर

भाई मालवीयजी,

उ० दि० 6.7.63

जै हिन्द! हिन्दुस्तान की भाषा हिन्दुस्तानी होनी चाहिये और उसका नाम हिन्दी हो तो कोई आपत्ति नहीं। शब्दकोश में टेकनीकल शब्दों को लेने के लिये जनता से मांग करनी चाहिये। भारत की विभिन्न बोलियों तथा भाषाओं में अनेक शब्द ऐसे हैं जिनको बोलने तथा समझने में आसानी रहती है लिये जा सकते हैं अथवा उनकी स्वीकृति भी की जा सकती है। जब कभी शब्दकोश बने तो हिन्दी के विद्वानों को जो संस्कृतमय हिन्दी

5.6.63

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत
National Archives of India

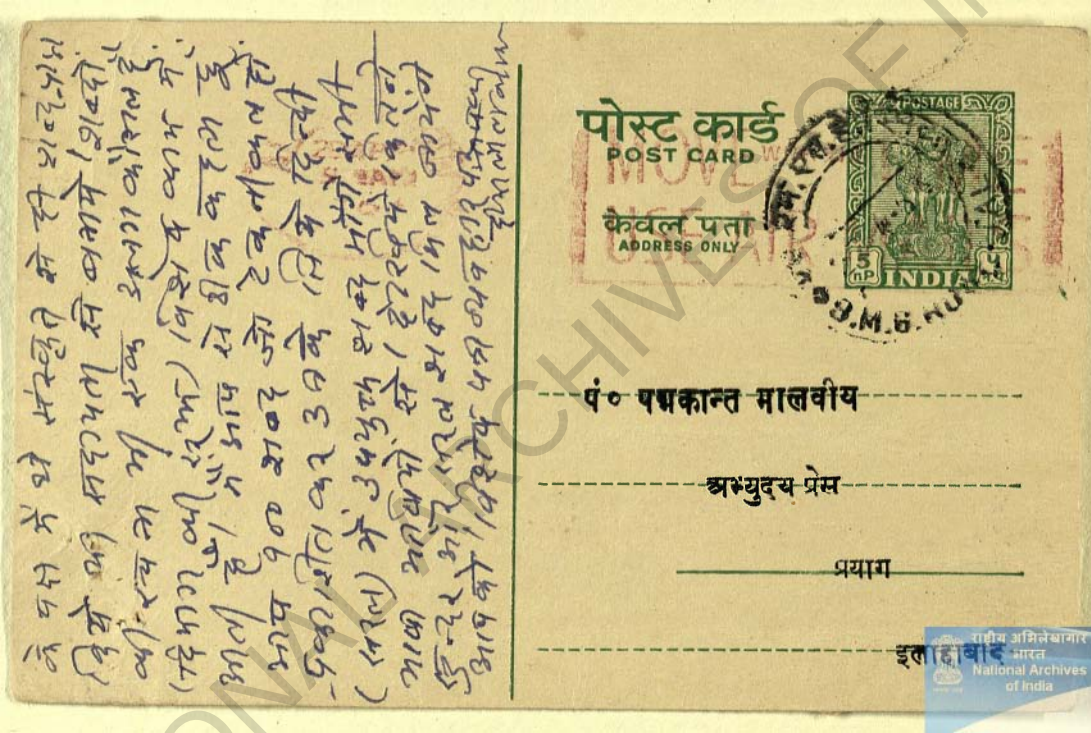

के पक्ष में थे संस्कृत से ही शब्द-ग्रहण
किये जायें सादृश्यता से बनाये शब्दों
की रचना भी एक अलग कौशल है
(दिमाग की उपज) विशेष काम में
आती है। मैं आप से ठीक कहता हूं
आप १०० शब्द जो टेक्नीकल हों
प्रकाशित कर उनके लिये हिन्दी
(सरल) में उपयुक्त शब्द मांगें सभी
भाषा भाषियों से। देखिये कितने
सुन्दर और सरल शब्द मिल जायेंगे
आपको विशेष पत्र व्यवहार पर
हीरालाल

पोस्ट कार्ड
POST CARD
केवल पता
ADDRESS ONLY

POSTAGE
INDIA
5 nP

पं० पद्मकान्त मालवीय
अभ्युदय प्रेस
प्रयाग
इलाहाबाद

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत
National Archives of India